मुजफ्फरपुर के लोक संस्कार एवं उसकी वैज्ञानिकता

शिव प्रिया*

सर्वप्रथम 'संस्कार' शब्द को परिभाषित कर उसकी व्याख्या तथा लोक संस्कार पर पैनी नजर डालना समीचीन प्रतीत होता है। संस्कार– ''सम उपसर्गपूर्वक कृ धतु से घत्र् प्रत्यय करके व्युत्पन्न संस्कार शब्द के अर्थ होते हैं– प्रतियत्न, मानसकर्म, भावनाख्य आत्मनः, अतीन्द्रिय गुण, पूर्णकरणं संस्कृत्या विभूषितकरणं, पवित्रीकरणम्, अंतःशुद्धि, मनःशक्ति, पुण्य संस्कारार्थ शरीरस्य, प्रण्यकृत्यैः शुद्धः बहिः अनंतस्चं। मूलरूप से व्याप्त दोषों का निराकरण गुणों को भरना ही संस्कार है।

संस्कृत साहित्य में इसका प्रयोग शिक्षा, संस्कृति, प्रशिक्षण, सौजन्य पूर्णता, व्याकरण सम्बन्धि शुद्धि, संस्करण, परिष्करणं, शोभा, आभूषण, स्मरणशक्ति, स्मरणशक्ति पर पड़ने वाला प्रभाव, शुद्धि क्रिया, धार्मिक विधि–विधान, अभिषेक विचार–भावना, धारण कार्य का परिणाम, क्रिया की विशेषता आदि अर्थों में किया जाता है। ''हिन्दू संस्कारों में अनेक धार्मिक विधि–विधान, उसके सहवर्ती नियम तथा अनुष्ठान भी समाविष्ट हैं जिनका उद्देश्य केवल औपचारिक दैहिक संस्कार ही न होकर, संस्कारित व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का परिष्कार, पूर्णता और शुद्धि भी है।

संस्कार शब्द को परिभाषित करने के पश्चात हिन्दू शास्त्रों में संस्कारों की संख्या पर दृष्टिपात करना आवश्यक जान पड़ता है। विद्वानों ने संस्कारों की संख्या में भिन्नता का उल्लेख किया है। यों मुजफरपुर के क्षेत्र में 16 संस्कारों की चर्चा होती है। धर्मसूत्र में 40 तथा मनु ने 13 संस्कारों का वर्णन किया है। प्रायः लोग 16 संस्कारों की चर्चा करते हैं। किन्तु व्यवहारिक दृष्टि से आज सोलह संस्कारों में भी कतिपय विलुप्त हैं।

प्राचीन भारत में मानव के व्यक्तिगत एवं सामाजिक विकास और उत्थान के लिए संस्कारों की व्यवस्था हिन्दू धर्मशास्त्रों में की गयी है। व्यक्ति को सुसंस्कृत एवं अनुशासित जीवन जीने के लिए संस्कारों की व्यवस्था की गयी थी। इसका मूलाधार यज्ञ और कर्मकाण्ड है। काल और परिस्थिति के परिवेश में संस्कारों में कतिपय भिन्नता आयी है। संस्कारों का प्रारंभ जन्म से पूर्व प्रारंभ होकर मृत्यु तक होती है। धरती पर आने से जाने तक मानव ज्ञान व्यक्ति विभिन्न संस्कारों से प्राप्त करता है। जब व्यक्ति यज्ञ करता है, हवन करता है और मंत्रोच्चारण करता है तो वह

***रिसर्च स्कालर, इतिहास विभाग**

संस्कारित होता है और देव समूह का आशीष उसे मिलता है जिससे उसके जीवन में विकास का क्रम प्रारंभ होता है। यह एक प्रकार से धर्म के माध्यम से सामाजिक अवधारणा है।

जन्म से कुसंस्कृत व्यक्ति संस्कारों के माध्यम से जीवन में बौद्धिक तथा आध्यात्मिक विकास करने में पूर्ण सक्षम होता है। जन्म से मृत्यु तक व्यक्ति अपने द्वारा किए जाने वाले संस्कारों द्वारा विविध बाधाओं से मुक्त होता है और संस्कार सम्पादन के पश्चात आत्मशुद्धि तथा आत्मज्ञान विकसित होता है। मानसिक शांति मिलती है और दैनिक कार्यों के सम्पादन में मनोवैज्ञानिक कारणों से प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है। मानव जीवन विभिन्न झंझावातों से परिपूर्ण रहता है और सुख–दुख की आँख–मिचौली में प्रायः व्यथित हो जाता है जिसे यज्ञ, हवन आदि क्रियाओं से संस्कारित होकर दूर किया जाता है। फिर सुसंस्कार से मानव मन में एक नयी उर्जा का संचार होता है जो जीवन के कंटकाकीर्ण पथ को आलोकित तथा सुगम बना देता है।

मानव जीवन में यदा–कदा कतिपय बार अशुभ समय आता है और वह व्यक्ति अपने कर्त्तव्य पथ से विचलित होकर तमिस्रा के गर्त में चला जाता है। ऐसी स्थिति में वह अनुभव करता है कि संस्कारगत कोई कमी अथवा बाधा के आगोश में जीवन रेखा आ गया है। फलतः ईश्वर आराधना के माध्यम से उसे दूर कर जीवन पथ को प्रशस्त करता है। इस क्रम में वह धूप, दीप, चन्दन, नैवेद्य एवं अन्य पूज्य सामग्रियों को एकत्र कर शुभ तिथि को विद्वान पंडित के द्वारा यज्ञादि कराता है ताकि अशुभ वक्त गुजर जाए और शुभ का शुभागमन हो। इस प्रकार जीवन को यज्ञों, पूजा, मंत्रों एवं साधना के माध्यम से संस्कारित किया जाता है।

संस्कार कार्य प्रारंभ करने के क्रम में मनुष्य संतान, धर्म, शिक्षा, उत्तम स्वस्थ काया की कामना के साथ यज्ञादि सम्पन्न करता है। अपनी इच्छित वस्तु अथवा अवसर प्राप्ति के लिए भी लोग ईश्वर के विविध रूपों की पूजा करते हैं। यथा–शक्ति प्राप्ति के लिए माँ दूर्गा की आराधना, धन प्राप्ति के लिए गणेश–लक्ष्मी की आराधना, स्वस्थ्य काया के लिए हनुमान आराधना, चतुर्दिक कल्याण के लिए शिव की आराधना व्यक्ति करता है। इन आराधनाओं से उसे आत्म संतुष्टि होती है और प्रगति के पथ पर अग्रसर इस आशा और विश्वास के साथ होता है कि उसकी कामना की पूर्ति होगी क्योंकि उसने विभिन्न संस्कारों के माध्यम से अपने को संस्कारित कर लिया है। अस्तु अपनी वांछित मनोकामना की पूर्त्ति के लिए लोग इन कार्यों को सम्पन्न करते हैं।

कतिपय संस्कारों के माध्यम से मानव सामाजिक धरातल पर प्रतिष्ठा पाता है। यथा जब यज्ञोपवीत, शादी–विवाह जैसे कार्यों को सम्पादित करता है तो एक वृहद आयोजन होता है। कई दिनों तक संस्कार से सम्बन्धित कार्य सम्पादित किए जाते हैं। सगुन, फलदान, मण्डप निर्माण, सत्यनारायण भगवान की पूजा, बारात का आना अथवा जाना, ढ़ोल–झाल का बजना, सगे सम्बन्धियों का

शुभागमन, समाज के लोगों का आना, सांस्कृतिक कार्यक्रम, भोजन–भात का आयोजन, वस्त्र का आदान–प्रदान, मिष्टान भोजन आदि का ऐसा सिलसिला शुरू होता है जिसमें हजारों की संख्या में समाज के लोगों की सहभागिता होती है जिससे व्यक्ति एवं परिवार का सामाजिकरण होता है। अतः संस्कार सामाजिकरण का भी एक महत्वपूर्ण आधर है।

आध्यात्म का आधार धर्म होता है और मनुष्य विभिन्न धार्मिक क्रियाओं के सम्पादन के साथ आध्यात्मिकता से जुड़ता है और आध्यात्म की दुनिया में बहुतेरे देवी–देवता, उनका यश और फल से अवगत होता है। अनुष्ठान करने के क्रम में उसके मन–मस्तिष्क एवं एक भावना जगती है, एक ज्ञान का दीप प्रज्जवलित होता है जिससे संस्कार का निर्माण होता है।

संस्कारों की संख्या–संस्कारों की कुल संख्या पर विद्वानों के विचार भिन्न–भिन्न हैं। ईसा से लगभग 1500 वर्षों पूर्व से अर्थात् वैदिक काल से ही मानव संस्कारित होता रहा। किन्तु वैदिक काल में संस्कारों की संख्या का उल्लेख नहीं है। कालान्तर के धर्मशास्त्रकारों ने अपने–अपने स्तर से संस्कारों की संख्या भिन्न–भिन्न दी है। गौतम धर्म सूत्र के अनुसार 40 प्रकार के संस्कार हैं और मनु के अनुसार मात्र 13 हैं। किन्तु प्रचलन में 16 संस्कारों की चर्चा अधिक प्रासंगिक हैं। स्वामी दयानंद सरस्वती एवं स्वामी सहजानंद सरस्वती ने 16 संस्कारों को ही माना है जिसका वर्णन निम्नवत् है–

1.	गर्भाधन संस्कार	2.	पुंसवन संस्कार
3.	सीमान्तोनयन संस्कार	4.	जात कर्म संस्कार
5.	छठी संस्कार	6.	नामकरण संस्कार
7.	अन्नप्रासन संस्कार	8.	निष्क्रमण संस्कार
9.	चूड़ामन संस्कार	10.	कर्णभेद संस्कार
11.	विद्यारंभ संस्कार	12.	यज्ञोपवित संस्का
13.	वेदारंभ संस्कार	14.	केशान्त संस्कार
15.	शादी–ब्याह संस्कार		
16.	अंत्येष्टि संस्कार		

सभी संस्कारों का अपना महत्व है। यहाँ विवाह संस्कार का वर्णन मुख्य तौर पर किया जा रहा है।

शादी–विवाह–जीवन के पथ पर अग्रसर होने वाला सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्कार विवाह होता है। प्राचीन काल में विवाह की आठ पद्धतियाँ थी। अब नयी लोक संस्कृति में उनमें सुधार हो गया है। पारस्कर गृह सूत्र में कहा गया है–विवाह के अंतर्गत वर–वधू की विभिन्न योग्यतायें और गुण, गोत्र और वर्ण आदि का विचार किया जाना था। विवाह क्रिया की सम्पन्नता के समय वाग्दान, वर वरण, कन्यादान, विवाह–होम, पाणि ग्रहण, हृदय स्पर्श, सप्तपदी, अश्वारोहन, सूर्यावलोकन,

ध्रुवदर्शन, त्रिरात्राव्रत और चतुर्थी कर्म आदि का विधान था। वंश–वृद्धि भी विवाह का मूल उद्देश्य था और धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष विवाह पर ही निर्भर था। मनु के ब्राह्मणों के लिए शेष तीन वर्णों की कन्या का वरण भी सही माना जाता है। सात पीढ़ी के बाद कन्या वरण के योग्य मानी गयी है। मनु के इसी सिद्धांत के अनुसार कायस्थ जाति के लोग सात पीढ़ी के बाद उसी कुल की कन्या का वरण करते हैं। ब्राह्मण एवं क्षत्रियों में सगोत्रा शादी वर्जित है। दो गोत्र के वर–वधु होने पर उत्पन्न संतान विलक्षण बुद्धि का होगा यह हमारे ऋषियों को ज्ञात था। आज के विज्ञान के युग में वनस्पतिशास्त्र के विद्वानों ने इसका प्रयोग कर साबित कर दिया है कि संकर बहुत तेज होता है। कृषि वैज्ञानिकों ने फल, सब्जी तथा अन्नोत्पादन में संकर बीज की व्यवस्था की है जिससे पैदावार बढ़ा है। पशुओं में भी अधिक दुग्धेत्पादन के लिए उन्नत नश्ल की व्यवस्था की है। अस्तु सगोत्र विवाह वर्जन के पीछे भी यही बात रही होगी।

शादी की क्रिया में वैज्ञानिकता–वर्तमान लोक संस्कृति में लड़की शादी के लिए वर वरण के क्रम में लोग लड़के की आजीविका अर्थात् मूल रूप से नौकरी–पेशा पर ध्यान देते हैं। उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि पर नहीं। नौकरी नहीं होने पर व्यापार एवं अन्य आय के स्रोत वर चयन का मुख्य आधार होता है। किन्तु पूर्ववर्ती काल में भूमि, भवन, माल–मवेशी, भोजन के साधन, सामाजिक प्रतिष्ठा, स्वास्थ्य एवं तत् सम्बन्धि बिन्दुओं पर ध्यान देते थे। इसके साथ वर–कन्या के रूप–सौन्दर्य को भी परखते थे। वरतुहारी को अंग्रेजी में मैच मेकर कहते हैं जिसका अर्थ हुआ जोड़ी मिलाने वाला। कभी–कभी ऐसा देखा गया है कि एक दूसरे की तुलना में बहुत अंतर होता है। नदिदास पुस्तक में ऐसी विचित्र जोड़ी पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की गयी है–''कहाँ पदमीनी और कहाँ काबुल का घोड़ा।

विधि ने हाय मिलाया कैसा जोड़ा।''

इस तरह के बेमेल विवाह जीवन के विकास को अवरूद्ध कर देते हैं। अगली संतति के संस्कार पर इसका प्रभाव पड़ता है।

मुजफ्फरपुर में शादी की लोक संस्कृति में फलदान, तिलक, द्वार पूजा, भाउर घुमाना, कमर खोलाई, हवन, अठंगर, लावा छिटना, ध्रुवतारा दर्शन के अंत में सिन्दूर देने की क्रिया अंत में होती है। इन सभी क्रियाओं में वैज्ञानिक जांच होती है जिसे लोग हंसी मजाक में आनन्द लेते हैं। उपर अंकित सभी क्रियायें लोक संस्कृति के तहत होते हुए इसमें वैज्ञानिक पहलु छुपा हुआ है। यथा–फलदान के दिन परिवार एवं समाज के लोग दर्जनों की संख्या में लड़का के घर जाते हैं। सब की दृष्टि लड़का, उसका परिवार, उसकी सम्पति आदि पर रहती है ताकि गलत आचरण के लड़के से शादी न हो जाए। पफलदान में फल, स्वर्ण आभूषण, रजत, पान, कसैली, नारियल फल आदि से वर वरण समाज करता है। भोज–भात, मिठाई खाने की क्रिया होती है। इसमें दर्जनों लड़की पक्ष की नजरें लड़के पर टीकी रहती है।

तिलक :– एक पंडित, नाई, घर का एक व्यक्ति और कुछ लेबर के साथ तिलक का सामान अर्थात् एक रसोईघर का सारा सामान, चार चक्का गाड़ी, दो चक्का गाड़ी, आलमीरा, फ्रिज, टी0वी0, सोफा, पलंग, फल आदि लेकर शुभ मुहूर्त में तिलक चढ़ाया जाता है। उस दिन सत्यनारायण भगवान की पूजा की जाती है और समाज को भोज दिया जाता है। महिलायें गीत संगीत से माहौल का रंगीन बना देती हैं। मजाक में महिलायें गाती हैं–

समधी खाइछन आलू आ दही
हिनका तिलक लेवे में दया नहीं

द्वार पूजा:– शादी के शुभ दिन वर पक्ष विभिन्न वाहनों, बैण्ड बाजे एवं अपने सगे–सम्बन्धियों के साथ बारात लेकर वधू पक्ष के दरवाजे पर उपस्थित होते हैं और लड़के की द्वार पूजा रूपया, अक्षत, फल–फूल से की जाती है। फिर दरवाजे पर पण्डाल में लगी कुर्सियों पर बारात पक्ष का स्वागत मिठाई और ठंढ़ा से होता है और मंच पर लड़का और उसका पिता बैठता है। ललनायें वधू को लेकर मंच पर समाज के सामने आती है और वर–वधू एक दूसरे को मार्ल्यापण करते हैं जिसे जयमाला कार्यक्रम कहा जाता है।

गल सेकाई– लड़का जब मण्डप पर जाता है तो सबसे पहले लड़की की मां दीप जलाकर तीन बार लड़के के गाल पर हाथ से गाल सेकती है। यहाँ द्रष्टव्य हो कि यह परम्परा प्राचीन है किन्तु इसमें वैज्ञानिकता है। उस काल में मिर्गी की बिमारी ज्यादा थी। यदि लड़का को मिर्गी की बिमारी रहती है तो दीप की ज्वाला की वजह से वह गिर जायेगा। यह शुभ–शुभ के बीच प्रथम मिर्गी की जांच है।

चाउर घुमाना:– इस क्रिया में मण्डप पर जाने के साथ लड़की का भाई गमछा लड़के के गले में डाल कर हँसी–मजाक के बीच तीन बार मण्डप का परिक्रमा कराता है। परिक्रमा के बीच उपस्थित सगे सम्बन्धियों की दृष्टि लड़के पर रहती है। इसमें देखा जाता है कि लड़का लंगरा तो नहीं है।

कमर खोलाई:– अब लड़के को मण्डप पर आसन पर बैठा कर उसके सारे वस्त्र को उतरवा दिया जाता है और मात्रा एक पीस धोती पहनने के लिए दी जाती है। इसमें लड़के के कमर से उपर का सारा शरीर वस्त्र विहीन रहता है। ऐसी क्रिया के क्रम में लोग उसके खाली शरीर को पैनी नजर से देखते हैं कि लड़का स्वस्थ है या नहीं। यह भी एक वैज्ञानिक जांच है।

हवन:– हवन कुण्ड में लकड़ी डालकर घी से हवन कराया जाता है। यदि अग्नि कम प्रज्जवलित होती है तो उसे पंखा से काफी प्रज्जवलित कर घी डाला जाता है। यों यह देवी–देवताओं के लिए हवन का प्रावधान होता है किन्तु प्रथम दृष्टया गाल सेकी के क्रम में मिर्गी अज्ञात रह गयी हो तो हवन में तेज अग्नि पर मिर्गी रोगी अवश्य उलट जायेगा। यह प्राचीन काल का एक रस्म है जो उस काल की भीषण मिर्गी की जांच है। मुजफरपुर शहर से 15 कि0मी0 पूर्व मारकन गांव में विगत वर्ष हवन के क्रम में लड़के को मिर्गी आ गयी और बारात लौट गयी।

लावा छिटना:– बांस के बने सूप में धन का लावा रखकर लड़का–लड़की को लावा छिटने के लिए कहा जाता है। इसमें भी हाथ की जांच है। इस बीच महिलायें स्वर लहरी में गाती हैं– लावा छिड़ियाउ दुलहा चूनी–चूनी खाउ।

ध्रुवतारा दिखाना:– उपर्युक्त सभी क्रियाओं से जांचोपरान्त लड़के को मण्डप से बाहर लाकर ध्रुवतारा दिखलाया जाता है। इसका मतलब यह है कि आप अपने जीवन में एक पत्नी के साथ ध्रुवतारा की तरह अटल रहेंगे।

सिन्दुर दान:– जब सभी विधियों से लड़के के स्वास्थ्य की जाँच हो जाती है तब सिन्दूर दान की क्रिया होती है। यों इन जांचों का ज्ञान किसी किसी को नहीं रहता किन्तु वैदिक काल में जो ये नियम निर्धारित किए गए उसके पीछे बात जांच की छुपी हुई थी। उस काल में आज की तरह नौकरी देखकर लड़के का चयन नहीं किया जाना वरण लड़के का स्वास्थ्य, धन–सम्पति एवं पारिवारिक प्रतिष्ठा इस का आधार था। सिन्दूर दान में क्षत्रिय समुदाय के लोग आज भी यहाँ तलवार की नोक से सिन्दूर देते हैं क्योंकि आल्हा रूदल में कहा गया है–

अठारह वर्ष क्षत्री जीय
बारह बरस जीये सियार

उससे आगे के जीवन का है धिक्कार ब्राह्मण एवं अन्य पिछड़ी जातियों में नारा से सिन्दूर लड़की की मांग में दिया जाता है और लड़की के पिता या उस तुल्य कोई हाथ में गंगाजल, तुलसी, ताम्बा, अक्षत, दही, पान–सुपारी आदि लेकर दोनो कुलों के पिता, पितामह का नाम लेकर वर को कन्यादान करते हैं और वर अपने पिता–पितामह का नाम लेकर कन्या को स्वीकार करते हैं।

कन्यादान के बाद उपवास पर रहे कन्या के माता–पिता को अन्न जल ग्रहण करने के लिए वर अनुरोध करता है और कन्या के पिता वर को कोहवर जाने का आदेश देता है।

विदाई:– विवाहोपरान्त सभी रस्म पूर्ण होने के बाद दरवाजे पर समधी एवं बारात विदाई का क्रम प्रारंभ होता है जिसमें सभी बारातियों को रूपया एवं रूमाल तथा पान कसैली देकर एक दूसरे से गले से गले मिलते हैं। किन्तु अब 10–20 वर्षों से यह विदाई समारोह समाप्त प्राय है।

आधुनिक सभ्यता और पश्चिमी प्रभाव के परिपेक्ष्य में आज संस्कारों का प्रचलन अत्यधिक मंद और गतिहीन हो गया है। मुण्डन, उपनयन, विवाह और अंत्येष्ठि जैसे संस्कारों को छोड़कर अन्य संस्कारों का हिन्दू समाज से लोप होता जा रहा है। आज के परिवर्तनशील, विज्ञानपरक और भौतिकवादी समाज में संस्कारों का महत्व नाममात्र का रह गया है। प्राचीन और नवीन सभ्यताओं के बीच संस्कारों का निस्तेज होना स्वभाविक भी है।

****